सोशल ऑडिट

मेरठ पेयजल योजना

₹ 341.03 करोड़

प्रस्तुतकर्ता

मेरठ सिटीजन फोरम

जल संशोधन संयंत्र, भोला की झाल

MEERUT
CITIZENS
FORUM

2011 से निर्मित ओवरहैड टैंक 2020 में भी अनुपयोगी ?

वितरण प्रणाली ध्वस्त

पेयजल आपूर्ति ठप

खडौली 1500 कि0ली0

रोशनपुर डौरली 1500 कि0ली0

प्रस्तावना

सर्वविदित है कि, मेरठ नगर में भूजल स्तर की गिरावट भयावह स्थिति में है। यह भी संज्ञान में आया है कि मेरठ सहित देश के 21 शहर 'डे–जीरो' (वर्ष 2030 में भूजल समाप्त) की कगार पर है। फोरम द्वारा अपने स्तर पर पहल करते हुए इस समस्या के समाधान हेतु वर्षा जल का संचयन कर उसे भूभृत में भेजने हेतु नागरिको को जागरूक करने व इसकी तकनीकी जानकारी देने के लिए केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड व भूगर्भ जल विभाग उत्तर प्रदेश की तकनीकी पर आधारित एक लघु पुस्तिका प्रकाशित की, जिसका विमोचन स्थानीय सांसद मा0 श्री राजेन्द्र अग्रवाल जी द्वारा किया गया। फोरम की सलाह पर आधारित नगर में अनेकों स्थानों पर वर्षा जल संचय कर भूभृत में भेजने की संरचना कराई गयी।

इसके अतिरिक्त भूभृत से अनावश्यक जल दोहन को बंद करने के दृष्टिकोण से यह भी जानकारी प्राप्त हुई कि मेरठ नगर निगम के पास 100 एमएलडी गंगाजल की उपलब्धता है तथा 157 नग टयूबवैल से भूगर्भ जल का दोहन हो रहा है। इस प्रकार नगर निगम के पास 414 एम.एल.डी. जल उपलब्ध है। जबकि नगर की 15 लाख की आबादी की जलापूर्ति के लिए कुल आवश्यकता वर्तमान मानको के अनुसार लगभग 250 एम.एल.डी. है। इस प्रकार केवल नगर निगम 100 एम.एल.डी. गंगाजल का पूर्ण उपयोग कर काफी टयूबवैल से जल दोहन बंद करने की स्थिति में है। पेयजल आपूर्ति के कार्यो की संरचना जल निगम द्वारा की जाती है एवं उसका रखरखाव नगर निगम द्वारा किया जाता है। फोरम द्वारा व्यक्तिगत रूप से व पत्राचार के माध्यम से दोनो संस्थाओं से निरन्तर ये आग्रह किया जाता रहा कि पूर्ण गंगाजल का उपयोग कर अनावश्यक रूप से भूजल दोहन कर रहे नलकूपों को बंद किया जाए।

निरन्तर प्रयास के उपरान्त भी सफलता न मिलने पर मेरठ नगर की पेयजल योजना रू0 341.03 करोड वर्ष 2008–09 का विस्तृत अध्ययन किया गया। जिसके अन्तर्गत प्रोजेक्ट का डिटेल अध्ययन व स्थलीय निरीक्षण किये गये। अध्ययन में यह स्पष्ट हुआ कि इस योजना में निर्माण की गयी अनेक संरचनाये अभी उपयोग में ही नही आ रही है। अतः इसका एक विस्तृत विश्लेषण तैयार किया गया जिसे मा0 सांसद जी की उपस्थिति में नगर निगम व जल निगम के अधिकारियों के साथ दिनांक 09.09.2019 में बैठक कर प्रस्तुत किया गया। दोनों विभागों के अधिकारियो द्वारा विश्लेषण पर सहमति व्यक्त की गयी तथा त्वरित कार्यवाही के लिए आश्वासन भी दिया गया।

उक्त के उपरान्त भी दोनों संस्थाओ द्वारा कोई उल्लेखनीय कार्यवाही नहीं की गयी। विवश होकर दिनांक 4 मार्च 2020 को फोरम व नगर के अन्य संभ्रांत नागरिकों द्वारा आयुक्त चौराहे पर एक सांकेतिक धरने का आयोजन भी किया गया। अब एक वर्ष से अधिक का समय व्यतीत हो चुका है। अभी भी दोनो विभागों से अपेक्षित कार्यवाही नहीं की गयी है और अभी भी योजना में निर्मित अनेक संरचनायें उपयोग में नहीं ली जा रही है। फोरम का स्पष्ट मत है कि यह सार्वजनिक धन के साथ खिलवाड़ है। योजना का विश्लेषण जन सामान्य की सूचनार्थ एक लघु पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत है।

मेरठ सिटिजन फोरम – 09.11.2020

भूमिगत जलाशय

2015 में निर्माण पूर्ण
अभी भी जल वितरण से जुड़ना अपूर्ण

गोला कुँआ 600 कि0ली0

बच्चा पार्क 550 कि0ली0

माधवपुरम 2750 कि0ली0

नौचंदी 550 कि0ली0

अमृत योजना के अन्तर्गत नगर निगम की पुर्नगठित पेयजल योजना अंकन रू 341.00 करोड़ के निर्धारित लक्ष्यों के सापेक्ष उपलब्धियों का विश्लेषण

समय–समय पर उ0प्र0 शासन/केन्द्र सरकार द्वारा जिला स्तर/नगरीय स्तर पर नागरिको के जीवन स्तर में सुधार की योजनायें क्रियान्वित करायी जाती है। लक्ष्य भी निर्धारित किये जाते हैं, परन्तु योजनाओं के लक्ष्यों के सापेक्ष उपलब्धियों का स्वतन्त्र संस्था से आंकलन व उसका सार्वजनिक किया जाना आवश्यक है।

सामान्यतः कार्यदायी संस्था द्वारा धनराशि के उपयोग की स्थिति शासन को प्रेषित कर योजना की इतिश्री हो जाती है। इससे शासन द्वारा कराये गये इन श्रेष्ठ कार्यों का जनसामान्य पर प्रभाव व लक्ष्यों की प्राप्ति न होने की स्थिति में कार्यदायी संस्था द्वारा आवश्यक कार्यवाही/योजनाओं की त्रुटियों को ठीक करने का अवसर नहीं मिल पाता।

वर्ष 2008 में मेरठ नगर क्षेत्र में नगर निगम द्वारा आपूर्ति किये जा रहे पेयजल क्षेत्र में उपलब्ध संसाधनों को बढ़ाकर 20 लाख की जनसंख्या के लिए 172 लीटर प्रति व्यक्ति की दर जलापूर्ति किया जाना सुनिश्चित करने के लिए संसाधन बढ़ा कर पुर्नगठित योजना तैयार की गई।

योजना में निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु प्रस्तावित कार्य, उनके क्रियान्वयन व उपयोग की स्थिति निम्नवत है –

क्र०सं०	प्रस्तावित कार्य	कार्य का क्रियान्वयन की स्थिति	उपयोग की स्थिति
1.	नये नलकूप – 57 नग	पूर्ण	1 नग उपयोग में नही
2.	रिबोर नलकूप – 22 नग	पूर्ण	उपयोग में
3.	उच्च जलाशय – 31 नग	पूर्ण	2 नग उपयोग में नही
4.	भूमिगत जलाशय – 6 नग	पूर्ण	4 नग उपयोग में नही
5.	भोला की झाल से 100 एम.एल.डी जलापूर्ति	पूर्ण	केवल 100 एम.एल.डी. से 58 एम.एल.डी. का ही उपयोग

मा0 सांसद जी की उपस्थिति में नगर निगम व जल निगम के अधिकारियों को सोशल ऑडिट रिपोर्ट का प्रस्तुतिकरण (दि० 09.09.2019)

धरना आयोजन पूर्व मेरठ सिटीजन फोरम की बैठक

आयुक्त चौराहे पर धरना देते मेरठ सिटीजन फोरम व अन्य संभ्रांत नगरवासी

विश्लेषण

योजना में पूर्व से उपलब्ध भूमिगत जलाशय (1) टाउन हॉल (2) शर्मा स्मारक (3) सर्किट हाउस तथा अमृत योजना में बने विकासपुरी व माधवपुरम के साथ–साथ पूर्व से उपलब्ध उच्च जलाशय (1) टाउन हॉल (2) सूरजकुण्ड (3) भगवतपुरा (4) बच्चा पार्क (5) पुरानी तहसील (6) तारापुरी (7) सर्किट हाउस (8) फतेहउल्लापुर जलाशय गंगाजल से जुडे हुए है, परन्तु माधवपुरम स्थित भूमिगत जलाशय भगवतपुरा, बच्चा पार्क, पुरानी तहसील व सर्किट हाउस के उच्च जलाशय गंगा जल संचालित नहीं हो रहे हैं।

विकासपुरी में सबसे अधिक क्षमता (6500 किली0) का भूमिगत जलाशय, जहाँ पर 13 पम्प लगे हैं, में **केवल 3 पम्प ही प्रयोग** में हैं। जिसके कारण तारापुरी तथा फतहेउल्लापुर की जलापूर्ति एक साथ नहीं चल पाती है। विकासपुरी, श्यामनगर, जनकपुरी, इस्लामाबाद व इससे मिले क्षेत्र में गंगाजल की आपूर्ति नहीं हो रही है। विकासपुरी जलाशय से ही **तारापुरी को जाने वाली पाइप लाइन** काफी समय से क्षतिग्रस्त है, इससे तारापुरी, अबरार नगर, ईदगाह कालोनी आदि में पेयजल आपूर्ति नहीं हो रही है।

उपरोक्त समस्त व्यवस्था ठीक हो जाने के उपरान्त 70 से 80 एम. एल.डी. गंगाजल का उपयोग सुनिश्चित होना सम्भव है। गंगाजल से जुड़े सभी भूमिगत जलाशयों व उच्च जलाशयो से आच्छादित क्षेत्रफल में स्थापित नलकूप जिनकी संख्या लगभग 35 बन्द कराकर गंगाजल की आपूर्ति बढ़ाई जा सकती है। साथ ही साथ इससे संकट ग्रस्त भूजल से लगभग 70 एम.एल.डी. जल का दोहन भी बन्द हो जायेगा, इसके साथ बिजली पर व्यय, चालको पर किया जा रहा व्यय भी बचेगा। इसके अतिरिक्त बच्चा पार्क, गोला कुँआ व नौचन्दी में स्थित भूमिगत जलाशयों को भी गंगाजल से अच्छादित किया जाना सम्भव है।

भूमिगत जलाशय (1) बच्चा पार्क (2) नौचन्दी (3) शास्त्रीनगर (4) गोला कुँआ कुल क्षमता 2250 किली0 पर किया गया **रू0 450 लाख व्यय** अस्थाई रूप से अनुपयोगी है।

रोशनपुर डौरली व खडौली की जलापूर्ति हेतु निर्मित किये गये 2 उच्च जलाशय क्षमता (1500 किली0 प्रति) व एक नलकूप पर किया व्यय **रू0 300 लाख अंकन** भी अभी तक अनुपयोगी है, एवं नौचन्दी क्षेत्र में निर्मित (1200 किली0) उच्च जलाशय भी उपयोगी नही है। जिस पर **रू0 145 लाख** की धनराशि भी अभी अनुपयोगी है।

कार्यदायी संस्था जल निगम, रखरखाव के लिए नगर निगम के मध्य समन्वय ना होने के कारण योजना का पूर्ण लाभ नगरवासियों को नहीं प्राप्त हो रहा है। अनुपयोगी संसाधनों पर किये गये व्यय के अस्थाई दुरूपयोग के लिए दायित्व निर्धारण भी आवश्यक है।

सुझाव

1. बच्चा पार्क, गोला कुँआ, नौचन्दी भूमिगत जलाशयों को गंगाजल से सम्बद्ध कर गंगाजल का पूर्ण उपयोग किया जा सकता है।
2. वर्ष 2008 में तैयार की गयी पुर्नगठित पेयजल योजना के समय जलापूर्ति के मानक 172 लीटर प्रति व्यक्ति प्रति दिन तैयार की गयी थी। सम्भवतः भूजल संकट को दृष्टिगत करते हुए शासन द्वारा वर्तमान में 155 लीटर प्रति व्यक्ति प्रति दिन के मानक निर्धारित किये गये हैं। जिसके अनुसार वर्तमान की जनसंख्या 18 लाख के लिए केवल 280 एम.एल. डी. जल की आवश्यकता है। जबकि उपलब्ध जलापूर्ति के संसाधन (1) 157 नग नलकूपों से 270 एम.एल.डी. (अपेक्षाकृत पुराने नलकूपों की क्षमता को कम आंकते हुए) है (2) 100 एम0.एल.डी. गंगाजल कुल 370 एम.एल.डी. जल उपलब्ध है। इस प्रकार लगभग 90 एम.एल.डी. जल आवश्यकता से अधिक उपलब्ध है।
3. इसके अतिरिक्त नगर में जलापूर्ति के लिए 3500 मिनी नलकूप (1 एच.पी. से 10 एच.पी तक) उपलब्ध है। ऐसे में 100 एम.एल.डी. के गंगाजल से आच्छादित नलकूपों को अस्थाई रूप से समस्त मिनी नलकूपों को स्थाई रूप से बन्द कर संकट ग्रस्त भूजल का दोहन बन्द किया जाना चाहिए।
4. पेयजल की उपलब्धता को देखते हुए नये हैंडपम्प्स न लगाये जायें व पुराने खराब पड़े हैण्डपम्प्स पर अनावश्यक व्यय न किया जाए।
5. योजना की कार्यदायी संस्था व रखरखाव संस्था के मध्य समन्वय व उच्च अधिकारी की अध्यक्षता में नियमित बैठक अत्यन्त आवश्यक है।

MEERUT CITIZENS FORUM

सोशल ऑडिट - मेरठ पेयजल योजना

10 साल बाद मेरठ में नहीं रहेगा पानी

● डे जीरो की कगार पर अपना मेरठ ● सरकारी विभाग ही कर रहे भूजल का दोहन

हिन्दुस्तान पड़ताल

भोला झाल

280 एमएलडी पानी की है शहर को जरूरत | 370 एमएलडी पानी लिया जा रहा है धरती से | 18 लाख मानी जा रही है वर्तमान में आबादी

मेरठ सहित 21 शहर हैं डे-जीरो की स्थिति में

नौचंदी भूमिगत जलाशय

आरटीओ के पास भूमिगत जलाशय

बोले अधिकारी

अधिकारियों को चेतावनी

पानी पिलाने के नाम पर 10 करोड़ का गोलमाल

dated- 23.02.20 Hindustan

आरोप

मेरठ | मुख्य संवाददाता

मेरठ सिटीजन फोरम ने आरोप लगाया है कि 341 करोड़ की लागत से शहर को गंगा जल पिलाने की योजना तैयार की गई थी, लेकिन योजना के 10 साल बाद भी शहर की आधी आबादी को भी गंगा जल नही मिल रहा है।

शहर को पानी पिलाने के नाम पर करीब 10 करोड़ का गोलमाल हो रहा है। यह 10 करोड़ की राशि की बचत होती है तो शहर का विकास हो सकता है। अब शहर को 100 मिलियन लीटर प्रतिदिन (एमएलडी) गंगा जल के लिए चार मार्च को कमिश्नरी पार्क में सामूहिक धरना दिया जाएगा। मेरठ सिटीजन फोरम के रामपाल सिंह वर्मा, अरविन्द रस्तोगी, डीके सक्सेना, आयुष मित्तल, विवेक सिंगल ने शनिवार को गंगा जल को लेकर मीडिया के सामने बात रखी। रामपाल सिंह वर्मा ने कहा कि 2008-09 में शहर को गंगा जल पिलाने के लिए 341 करोड़ का प्रोजेक्ट बनाया गया। 100 एमएलडी गंगा जल सप्लाई की योजना बनाई गई थी। तब मात्र 97 ट्यूबवेल थे। तब 14 लाख की आबादी के हिसाब से मात्र 241 एमएलडी पानी की आवश्यकता थी। अब 157 ट्यूबवेल से 314 एमएलडी पानी का दोहन हो रहा है। 100 एमएलडी गंगा जल उपलब्ध होने से यह 414 एमएलडी हो जाएगा, जबकि 18 लाख की आबादी के हिसाब से 280 एमएलडी पानी की आवश्यकता है। इस तरह 65 से 70 ट्यूबवेल ... सकता है। प्रतिमाह 80-90 लाख और प्रति वर्ष करीब 10 करोड़ रुपये खर्च किया जा रहा है। इस 10 करोड़ रुपये की बचत की जा सकती है। नगर निगम, जल निगम की उदासीनता के

मेरठ सिटीजन फोरम ने 10 करोड़ रुपये के गोलमाल का आरोप लगाया।

आधे शहर को नहीं मिल रहा गंगाजल

मेरठ सिटीजन फोरम के पदाधिकारियों का दावा है कि आधे शहर को गंगा जल की सप्लाई नहीं हो रही। बच्चा पार्क, पुरानी तहसील के सामने टैंक, माधवपुरम, नौचंदी, गोलाकुंआ के टंकी में तो पेयजल जा ही नहीं रहा। इसी तरह भगवतपुरा, विकासपुरी, तारापुरी, फतेहउल्लापुर आदि में भी जलापूर्ति नहीं हो रही।

शासन को भेजा गया है प्रस्ताव

100 एमएलडी गंगा जल की सप्लाई के लिए जल निगम ने करीब पांच करोड़ का प्रस्ताव दिया है, जिसे शासन को भेज दिया गया है। इतना पैसा निगम के पास उपलब्ध नहीं है- ब्रजपाल सिंह, सहायक नगर आयुक्त व जीएम(जल)

दिनांक - 13.10.20 दैनिक जागरण

वाटर ट्रीटमेंट प्लांट के संचालन को लेकर जल निगम की दो इकाइयां आमने-सामने

आरोप-प्रत्यारोप

- जल निगम नागर इकाई के जिम्मे है पहले से संचालन
- जल निगम की यांत्रिकी इकाई लेना चाहती है जिम्मा

जागरण संवाददाता, मेरठ : भोला की झाल स्थित 100 एमएलडी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट के संचालन और अनुरक्षण को लेकर जल निगम की दो इकाइयों के बीच विवाद शुरू हो गया है। यांत्रिकी इकाई यह कार्य लेने को लालयित है जबकि नागर इकाई पहले से ही यह काम देख रही है।

सोमवार को जल निगम यांत्रिकी के अधिशासी अभियंता अमित सहरावत ने जलनिगम के एमडी को पत्र लिखा है। इसमें महाप्रबंधक जलकल और महापौर के पत्रों का हवाला दिया है। इसमें जल निगम की नागर इकाई को 100 एमएलडी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट को जल निगम ... यांत्रिकी ने एमडी जलनिगम को लिखे पत्र में यह भी बताया है कि वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का संचालन व रखरखाव कार्यदायी फर्म टीपल इंफ्रा के पास है। उसने प्लांट का मेंटीनेंस में लापरवाही बरती है। अभी तक संस्था पर कोई कार्रवाई नहीं की गई है। वहीं जल निगम की नागर इकाई के परियोजना प्रबंधक ... से कोई आदेश प्राप्त नहीं हुआ है। आदेश आता है तो इस पर विचार

भुगतान से पहले होगा संयुक्त निरीक्षण

100 एमएलडी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट के संचालन एवं अनुरक्षण का काम देख रही कार्यदायी संस्था को 81.50 लाख रुपये का भुगतान होना है। जलकल महाप्रबंधक रतनलाल ने कहा कि संस्था को भुगतान से पहले जलनिगम के अधिकारियों के साथ प्लांट का निरीक्षण किया जाएगा। कमियां कितनी दूर की गई हैं, यह सुनिश्चित करने के बाद भी भुगतान किया जाएगा। हालांकि भुगतान के संबंध में पत्रावली नगर आयुक्त कार्यालय भेजी जा चुकी है।

दिनांक - 18.10.20 दैनिक जागरण

सांसद पहुंचे वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, मिलीं कई कमियां

निरीक्षण

- निगम, जलकल व जलनिगम के अफसरों के साथ किया निरीक्षण

चला दो प्लांट...एक एक महीने का कर देंगे भुगतान

शहर में 100 एमएलडी गंगाजल की आपूर्ति जरूरी

दिनांक - 30.10.20 अमर उजाला

प्लांट की नहीं हो पाएगी गुणवत्तापूर्ण सफाई

पेयजल आपूर्ति में परेशानी होने पर शासन में करेंगी शिकायत : महापौर

मेरठ। भोला की झाल पर बने वाटर ट्रीटमेंट प्लांट की वार्षिक सफाई पर बृहस्पतिवार को भी फैसला नहीं हो सका। अब गंगनहर चालू होने में केवल 16 दिन बचे हैं। प्लांट सूत्रों का कहना है कि इतने कम समय में प्लांट का दुरुस्तीकरण गुणवत्तापूर्ण ढंग से नहीं हो सकेगा। वहीं, महापौर ने शहरवासियों को पेयजल उपलब्ध कराने में दिक्कत आने पर शासन से शिकायत करने की चेतावनी दी है।

काउंटडाउन 16 दिन शेष

भोला की झाल पर बने 100 एमएलडी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट से शहर को करीब 35 एमएलडी पानी की आपूर्ति की जाती है। वार्षिक नहर बंदी के समय ही प्लांट की वार्षिक सफाई की जाती है। क्लोरीफ्लाकूलेटर की सिल्ट निकालकर इसमें फूडग्रेड पेंट किया जाता है। इस सबमें करीब 20 दिन लगते हैं। नगर निगम ने जल निगम को तीन महीने से भुगतान नहीं किया है। इसके चलते जल निगम ने प्लांट की सफाई शुरू नहीं कराई है। वहीं, नगर आयुक्त डॉ. अरविंद कुमार चौरसिया ने भी भुगतान मामले में आज बैठक नहीं बुलाई है। उधर, महापौर सुनीता वर्मा ने कहा कि शहरवासियों को जलापूर्ति कराना निगम अधिकारियों की जिम्मेदारी है। यदि इसमें गड़बड़ी हुई तो वे

प्लांट की सफाई पर नहीं हो सका फैसला

दिनांक - 29.10.20 अमर उजाला

माई सिटी रिपोर्टर

काउंटडाउन 17 दिन शेष

मेरठ। वाटर ट्रीटमेंट प्लांट की सफाई पर बुधवार को भी फैसला नहीं हो सका। अब नहर चालू होने में 17 दिन बचे हैं। प्लांट की सफाई के लिए जितने कम दिन मिलेंगे उतनी ही खराब सफाई होगी।

नगर निगम और जल निगम की इस लड़ाई का खामियाजा जनता को भुगतना पड़ेगा। वार्षिक नहर बंदी के बाद ही वाटर ट्रीटमेंट प्लांट की सफाई होती है। इसमें करीब 20 दिन का समय लगता है। सफाई के दौरान प्लांट की सेटलिंग बेसिन से सिल्ट निकाली जाती है और क्लोरी फोकूलेटर की सिल्ट निकालकर उसमें फूड ग्रेड का एपोक्सी पेंट किया जाता है।

चार चौकीदारों ने छोड़ा काम

मेरठ। भोला की झाल पर बने नगर निगम के वाटर ट्रीटमेंट प्लांट की सुरक्षा में लगे पांच में से चार चौकीदार वेतन नहीं मिलने पर काम छोड़कर चले गए हैं। अब वहां की सुरक्षा एक चौकीदार के जिम्मे है। जिससे इतने बड़े प्लांट की सुरक्षा पर सवाल खड़े हो गए हैं। प्लांट संचालन और रखरखाव कातीन महीने का 81.50 लाख रुपये का भुगतान नहीं होने से जल निगम की नागर कार्य इकाई ने आउटसोर्सिंग फर्म टीएल इंफ्रा को भी तीन माह से भुगतान नहीं किया है। ब्यूरो

दिनांक - 11.05.19 अमर उजाला

अफसरों की मनमानी, नहीं पहुंचा जलाशय तक पानी

350 करोड़ की गंगाजल परियोजना की गई थी शहर में लागू || भूमिगत जलाशय, पानी की टंकी अभी तक नहीं हो सकी चालू

यहां बने हैं जल संसाधन

कई जलाशयों को गंगाजल की पाइप लाइन से नहीं जोड़ सका जल निगम

dated 23.02.20 Amar Ujala

'गंगाजल न मिलने पर हो रहा शहर का भूगर्भ जल दोहन'

प्रेसवार्ता में जानकारी देते मेरठ सिटीजन फोरम के पदाधिकारी।

मेरठ। गंगाजल की आपूर्ति न होने से शहर में 157 ट्यूबवेल भूगर्भ जल का दोहन कर रहे हैं। ये बात साकेत स्थित मेरठ सिटीजन फोरम के पदाधिकारियों ने प्रेस वार्ता में कही। उन्होंने नगर निगम और जल निगम की उदासीनता को देखते हुए चार मार्च को कमिश्नरी स्थित चौधरी चरण सिंह पार्क में सांकेतिक धरना देने का एलान कर दिया है। इसके लिए एक नोटिस जल और नगर निगम को दिया गया है। वहीं, इसकी प्रति प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री सहित जिला प्रशासन को भेज दी गई है। मेरठ सिटीजन फोरम के पदाधिकारियों का कहना है कि मेरठ नगर की जनसंख्या 18 लाख है। इसके लिए पेयजल आवश्यकता 280 मिलियन प्रति लीटर प्रतिदिन हैं। वहीं, नगर में 157 नलकूप हैं और नगर निगम के

दिनांक - 13.10.20 अमर उजाला

तीन साल बाद भी हैंडओवर नहीं हुआ वाटर ट्रीटमेंट प्लांट

माई सिटी रिपोर्टर

मेरठ। 400 करोड़ की लागत से भोला की झाल पर बने वाटर ट्रीटमेंट प्लांट को चलाने में एक और अनियमितता उजागर हुई है। प्लांट को चलाने का जिम्मा जल निगम की तकनीकी शाखा के पास है, लेकिन इसे हैंडओवर करने के बजाय तीन साल से सिविल शाखा ही चला रही है। हर बार पत्राचार के बावजूद निगम की नागर इकाई ने कब्जा नहीं छोड़ा। अनुभव न होने के चलते प्लांट इस समय जर्जर अवस्था में पहुंच चुका है।

प्लांट के संचालन और रखरखाव का अधिकार जल निगम की यांत्रिकी शाखा को है। लेकिन प्लांट बनाने वाली कार्यदायी संस्था जल निगम की

अमर उजाला फॉलोअप

400 करोड़ के वाटर ट्रीटमेंट प्लांट से जेब भरने का मामला

12 अक्तूबर को प्रकाशित खबर

फर्जीवाड़ा : 400 करोड़ के प्लांट से भरी जा रही जेब

"जल निगम की नागर इकाई को प्लांट संचालन का अधिकार नहीं है। मैंने इसे जल निगम की यांत्रिकी शाखा से चलवाने को कहा है। सच्चाई जानने के लिए जल्द ही प्लांट का निरीक्षण किया जाएगा। -सुनीता वर्मा, महापौर

सात सितंबर को महाप्रबंधक जलकल रतन लाल ने भी प्लांट चलाने का जिम्मा यांत्रिकी शाखा को सौंपने के लिए प्रस्ताव मांगा था। इससे

दिनांक - 28.10.20 अमर उजाला

प्लांट पूरी क्षमता से चले तो बंद होंगे 40 नलकूप

जल आपूर्ति होगी बेहतर, मेंटीनेंस के नौ करोड़ भी बचेंगे, जल निगम ने मंडलायुक्त को सौंपी भूजल दोहन रोकने की रिपोर्ट

माई सिटी रिपोर्टर

04 जलाशय पाइप लाइन से जोड़ने पर पूरे शहर को मिल सकेगा गंगाजल

प्लांट की सफाई पर नहीं हुई बात

18 दिन शेष

भेजी गई है डीपीआर

भूजल दोहन रुके

दिनांक 31.10.20 अमर उजाला

प्लांट ठप होने की तरफ, अधिकारी बेफिक्र

नगर और जल निगम के अधिकारियों के अड़ियल रवैये से साफ नहीं हो रहा प्लांट

माई सिटी रिपोर्टर

मेरठ। भोला की झाल स्थित 50 करोड़ की लागत का वाटर ट्रीटमेंट प्लांट अगर सफाई के अभाव में ठप हो गया तो शहर में पानी के लिए मारामारी मचना तय है। लेकिन नगर निगम और जल निगम के अधिकारियों को इसकी कोई फिक्र नहीं है।

गंग नहर चालू होने में अब केवल 15 दिन बचे हैं। इसके बावजूद दोनों विभाग गैर जिम्मेदार रवैया अपनाते हुए प्लांट की सफाई नहीं करा रहे हैं। फिलहाल नलकूपों के भरोसे चल रही शहर की जलापूर्ति किसी एक नलकूप के ठप होने पर ही ... जाएगा। इस सबके बावजूद अधिकारी चैन की बंसी बजा रहे हैं।

काउंटडाउन 15 दिन शेष

नलकूपों के भरोसे शहर की जलापूर्ति, एक नलकूप ठप होते ही चरमरा जाएगी व्यवस्था

100 एमएलडी वाटर ट्रीटमेंट प्लांट से शहरवासियों को रोजाना 35 एमएलडी गंगाजल की जलापूर्ति की जाती है। गंगनहर की वार्षिक सफाई बंदी के दौरान ही इस प्लांट की भी वार्षिक सफाई की जाती है। गत 15 अक्तूबर की आधी रात से गंगनहर बंद चल रही है जो आगामी 14 नवंबर की आधी रात को चालू कर दी जाएगी। नहर चालू होने में अब

एक-दूसरे के पाले में गेंद

प्लांट के संचालन और रखरखाव का जिम्मा संभाल रहे जल निगम की नागर कार्य इकाई के परियोजना प्रबंधक रमेश चंद्रा का कहना है कि निगम तीन महीने का बकाया भुगतान कर दे तो अगले दिन से ही प्लांट की सफाई शुरू कर दी जाएगी। भुगतान नहीं होने से प्लांट की सफाई नहीं हो पा रही है। जबकि नगर आयुक्त डॉ. अरविंद कुमार चौरसिया का कहना है कि प्लांट की सफाई का काम जल निगम को करना है। जहां तक तीन महीने के भुगतान की बात है तो जल निगम को पहले निरीक्षण में मिली खामियों को दूर करना होगा। इससे पहले भुगतान नहीं होगा।

दिनांक - 27.10.20 अमर उजाला

19 दिन बचे, नहीं शुरू हुई सफाई

नगर और जल निगम में नहीं रुकी खींचतान तो दिवाली बाद नहीं मिलेगा गंगाजल

माई सिटी रिपोर्टर

वाटर ट्रीटमेंट प्लांट : 11 दिन से बंद है गंग नहर

भुगतान होने पर ही कराएंगे सफाई

■ 1400 ट्रॉली निकलती है सिल्ट

दिनांक - 18.10.20 हिन्दुस्तान

क्यों नहीं मिल रहा 100 एमएलडी गंगाजल

मेरठ | मुख्य संवाददाता

शनिवार को मेरठ सिटीजन फोरम की ओर से भोला की झाल का मामला संज्ञान में लाने के बाद सांसद राजेंद्र अग्रवाल पहली बार भोला की झाल स्थित वाटर ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण करने पहुंचे। सांसद के पहुंचने से पहले ही कागजों में संचालन कर रही प्रतिभा इंडस्ट्रीज के अधिकारी वहां पहुंच गए।

निरीक्षण के दौरान जब सांसद ने नगर निगम और जल निगम अधिकारियों से शहर को 100 मिलियन लीटर प्रतिदिन (एमएलडी) पानी नहीं मिलने का कारण पूछा तो सभी एक अधिकारी एक-दूसरे की ओर देखने लगे। इस पर सांसद ने नगर निगम, जल निगम ... संयुक्त रिपोर्ट देने को कहा।

भोला की झाल वाटर ट्रीटमेंट प्लांट को लेकर कई महीने से विवाद चल रहा है। इस कारण नगर निगम की ओर से जल निगम को तीन महीने ... रखरखाव का करीब 81 लाख रुपये लंबित है।

दिनांक - 18.10.20 अमर उजाला

सांसद ने किया प्लांट का निरीक्षण

मेरठ। भोला झाल स्थित वाटर ट्रीटमेंट प्लांट की खामियां उजागर होने के बाद शनिवार को सांसद राजेंद्र अग्रवाल ने प्लांट का निरीक्षण किया। मौके पर मिली अव्यवस्थाएं और प्लांट को पूरी क्षमता से न चलाए जाने को लेकर उन्होंने नाराजगी जताई। शहर को गंगाजल सप्लाई करने के लिए भोलाझाल पर 100 एमएलडी का वाटर ट्रीटमेंट प्लांट बनाया गया है। नगर निगम ने जल निगम को इसके संचालन का जिम्मा सौंपा है। अमर उजाला ने ट्रीटमेंट प्लांट की खामियों पर खबरें प्रकाशित की। वहीं आज से शहर में गंगाजल की आपूर्ति नहीं की जा रही है। ब्यूरो

कमीशन के चक्रव्यूह में फंसी शहर की जलापूर्ति, गिर रहा जलस्तर

मेरठ सिटीजन्स फोरम, ए-211, साकेत, मेरठ

@MeerutCitizens